हिन्दी व्याकरण

Hindi Grammar

अपठित गद्यांश में व्याकरण आधारित प्रश्नों को हल करने में यह अध्याय सहायक है। इस अध्याय से कोई प्रश्न प्रत्यक्ष रूप से नहीं पूछा जाता परन्तु गद्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों को हल करने में यह अध्याय सहायक है।

व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करता है तथा उसे शुद्ध उच्चारित करने, लिखने और समझने की विधि बताता है। इसके द्वारा भाषा विशेष के वे नियम स्पष्ट किए जाते हैं, जो शिष्ट एवं सुशिक्षित जनों के भाषा-प्रयोग में दिखाई देते हैं। व्याकरण के अन्तर्गत संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का वर्णन किया गया है।

संज्ञा

जिन विकारी शब्दों से किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी, गुण, भाव आदि का बोध होता है, उन्हें संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद माने जाते हैं; जो निम्न हैं

1. जातिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें 'जातिवाचक' संज्ञा कहते हैं; जैसे—

'घर' कहने से सभी तरह के घरों का, 'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का और 'नदी' कहने से सभी नदियों का जातिगत बोध होता है। जातिवाचक संज्ञाओं की स्थितियाँ इस प्रकार हैं

(i) **सम्बन्धियों, व्यवसायों, पदों और कार्यों के नाम** भाई, माँ, डॉक्टर, वकील, मन्त्री, अध्यक्ष, किसान, अध्यापक, मजदूर इत्यादि।

(ii) **पशु-पक्षियों के नाम** बैल, घोड़ा, हिरण, तोता, मैना, मोर इत्यादि।

(iii) **वस्तुओं के नाम** मकान, कुर्सी, मेज, पुस्तक, कलम इत्यादि।

(iv) **प्राकृतिक तत्त्वों के नाम** बिजली, वर्षा, आँधी, तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी इत्यादि।

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान आदि का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **व्यक्तियों के नाम** राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, हज़रत मोहम्मद, ईसा मसीह इत्यादि।

(ii) **फलों के नाम** आम, अमरूद, सेब, संतरा, केला इत्यादि।

(iii) **ग्रन्थों के नाम** रामायण, रामचरितमानस, पद्मावत, कामायनी, कुरान, साकेत इत्यादि।

(iv) **समाचार पत्रों के नाम** हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला इत्यादि

(v) **नदियों के नाम** गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, सिन्धु इत्यादि।

(vi) **नगरों के नाम** लखनऊ, वाराणसी, आगरा, जयपुर, पटना इत्यादि।

इन शब्दों से एक ही वस्तु का बोध होता है। अत: ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं। जब व्यक्तिवाचक संज्ञा एक से अधिक का बोध कराने लगती है, तो वह जातिवाचक संज्ञा हो जाती है।

3. भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु के गुण, दशा या व्यापार का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **गुण के अर्थ में** सुन्दरता, कुशाग्रता, बुद्धिमत्ता इत्यादि।

(ii) **अवस्था के अर्थ में** जवानी, बचपन, बुढ़ापा इत्यादि।

(iii) **दशा के अर्थ में** उन्नति, अवनति, चढ़ाई, ढलान इत्यादि।

(iv) **भाव के अर्थ में** मित्रता, शत्रुता, कृपणता इत्यादि।

इन शब्दों से भाव विशेष का बोध होता है। अत: ये सभी भाववाचक संज्ञा शब्द हैं।

4. समूहवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति की वस्तुओं के समूह का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **व्यक्तियों के समूह** कक्षा, सेना, समूह, संघ, टुकड़ी, गिरोह और दल इत्यादि।

(ii) **वस्तुओं के समूह** कुंज, ढेर, गट्ठर, गुच्छा इत्यादि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी ऐसे पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, जिसे हम नाप-तौल सकते हैं लेकिन गिन नहीं सकते हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **धातुओं के नाम** सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, पीतल आदि।

(ii) **पदार्थों के नाम** दूध, दही, घी, तेल, पानी आदि।

अत: ये सभी द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द हैं।

लिंग

लिंग शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है—चिह्न, जिस चिह्न द्वारा यह जाना जाए कि अमुक शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का उसे लिंग कहते हैं। दूसरे शब्दों में संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध, हो उसे लिंग कहते हैं। हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं

1. **पुल्लिग** जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है, उन्हें पुल्लिग कहते हैं; जैसे—लड़का, बैल, घोड़ा, पेड़, नगर इत्यादि। यहाँ 'लड़का', 'बैल', 'घोड़ा' से यथार्थ पुरुषत्व तथा 'पेड़' और 'नगर' से कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है।
2. **स्त्रीलिंग** जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता [illegible]

वचन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं

1. **एकवचन** शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—नदी, लड़का, घोड़ा, कलम आदि।
2. **बहुवचन** शब्द के जिस रूप से अनेक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—लड़के, घोड़े, कलमें, नदियाँ आदि।

कारक

वाक्य में जिस शब्द का सम्बन्ध क्रिया से होता है, उसे कारक कहते हैं। इन्हें **विभक्ति** या **परसर्ग** (बाद में जुड़ने वाले) भी कहा जाता है। ये सामान्यत: स्वतन्त्र होते हैं और संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी में परसर्ग प्रत्ययों के विकसित रूप हैं। हिन्दी में आठ कारक माने गए हैं, जो निम्न हैं

1. **कर्ता कारक** वाक्य में जिस शब्द द्वारा काम करने का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे—राम ने श्याम को मारा।

   इस वाक्य में राम कर्ता है, क्योंकि मारा क्रिया करने वाला 'राम' ही है। इसका परसर्ग 'ने' है।
2. **कर्म कारक** वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे—राम ने श्याम को मारा

   यहाँ कर्ता राम है और उसके मारने का फल 'श्याम' पर पड़ता है। अत: श्याम कर्म है। यहाँ श्याम के साथ कारक चिह्न 'को' का प्रयोग हुआ है।
3. **करण कारक** करण का अर्थ है—साधन संज्ञा का वह रूप जिससे किसी क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—शिकारी ने शेर को बन्दूक से मारा।

   इस वाक्य में बन्दूक द्वारा शेर मारने का उल्लेख है। अतएव बन्दूक करण कारक हुआ। करण कारक के चिह्न हैं—'से', 'के', 'द्वारा', 'के कारण, 'के साथ', 'के बिना' आदि।
4. **सम्प्रदान कारक** जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए इसका बोध कराने वाले शब्द को सम्प्रदान कारक कहते हैं; जैसे—उसने विद्यार्थी को पुस्तक दी वाक्य में विद्यार्थी सम्प्रदान है और इसका चिह्न 'को' है।
5. **अपादान कारक** वाक्य में जिस स्थान या वस्तु से किसी व्यक्ति या वस्तु की पृथकता अथवा तुलना का बोध होता है, वहाँ अपादान कारक होता है। अपादान कारक में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे—

   मैं अल्मोड़ा से आया हूँ।
   मैं जोशी जी से आशुलिपि सीखता हूँ।
6. **सम्बन्ध कारक** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगाव प्रतीत हो उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

   'अनीता सुरेश की बहन है' यहाँ 'की' परसर्ग चिह्न अनीता और सुरेश के भाई-बहन होने के सम्बन्ध को प्रकट करता है। सम्बन्ध कारक के परसर्ग चिह्न 'का', 'की', 'के' हैं।
7. **अधिकरण कारक** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार, आश्रय, समय या शर्त सूचित होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं इसके परसर्ग (कारक चिह्न) में, घर है; जैसे—

   उमेश लखनऊ में रहता है।
   पुस्तक मेज पर रखी है।
8. **सम्बोधन कारक** संज्ञा के जिस रूप में किसी को पुकारने, चेतावनी देने सावधान करने या सम्बोधित करने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन कारक की कोई विभक्ति नहीं होती है। इसे प्रकट करने के लिए है, हे, अरे, अजी, रे आदि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—

   हे राम! रक्षा करो।
   अरे मूर्ख! सँभल जा।
   ओ लड़कों! खेलना बन्द करो।

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों को प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। "राजीव देर से घर पहुँचा, क्योंकि उसकी ट्रेन देर से चली थी।" इस वाक्य में 'उसकी' का प्रयोग 'राजीव' के लिए हुआ, अत: 'उसकी' शब्द सर्वनाम कहा जाएगा। हिन्दी में सर्वनामों की संख्या 11 है, जो निम्न हैं—

मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

सर्वनाम के भेद

व्यावहारिक आधार पर सर्वनाम के निम्नलिखित छ: भेद हैं

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता, श्रोता और अन्य (जिसके सम्बन्ध में बात हो) का बोध कराने वाला सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं

(i) **उत्तम पुरुष**

वक्ता या लेखक जिन सर्वनामों का प्रयोग अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—**मैं पढ़ता हूँ**। इस वाक्य में वक्ता या लेखक ने अपने लिए 'मैं' सर्वनाम का प्रयोग किया है। अत: यह उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम है। इसी प्रकार, **हम दिल्ली जाएँगे**। वाक्य में 'हम' उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम है।

(ii) **मध्यम पुरुष**

वक्ता या लेखक जिससे अपनी बात कहता है उसके लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

तुम अपना कार्य नहीं करते हो।
आप भोजन करें।

इन वाक्यों में तू, तुम और आप मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

(iii) **अन्य पुरुष**

वक्ता या लेखक, श्रोता या पाठक से जिसके विषय में बात करता है उसके लिए प्रयुक्त होने वाला सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक कहलाता है; जैसे—

वे कौन हैं?
वह दुष्ट है।

इन वाक्यों में वे, वह, यह, ये शब्द अन्यपुरुष वाचक सर्वनाम हैं।

2. निजवाचक सर्वनाम

वक्ता या लेखक जहाँ अपने लिए 'आप' या 'अपने आप' शब्द का प्रयोग करता है वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है; जैसे—

- मैं **अपने आप** काम कर लूँगा।
- **आप** भला तो जग भला

3. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न पूछने के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **कौन** शोर कर रहा है?
- तुम **कहाँ** रहते हो?

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के साथ सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **जिसकी** लाठी **उसकी** भैंस।
- **जो** कहा गया **वही** करो।

5. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। 'यह', 'वह', 'ये', 'वे' निश्चयवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- **यह** उपयोगी साधन है।
- **वह** बहुत सुन्दर है।

6. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **कोई** आ रहा है।
- वह **कुछ** लाया था।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

राम बहुत तेज़ दौड़ता है।

राम ↓ विशेष्य

बहुत ↓ प्रविशेषण

तेज़ ↓ विशेषण

दिए गए उदाहरण में राम संज्ञा शब्द है, जिसकी विशेषता तेज दौड़ने से है। अत: यहाँ तेज़ विशेषण है।

विशेषण 'तेज़', राम की विशेषता बता रहा है। अत: राम विशेष्य है। 'तेज' विशेषण की विशेषता, 'बहुत' यहाँ प्रविशेषण है।

विशेषण के भेद

विशेषण के चार भेद निम्नलिखित हैं

1. गुणवाचक विशेषण

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा के गुण अथवा दोष का बोध होता है, उन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं। जैसे—

शूरवीर, कायर, बलवान, नया, पुराना, शहरी, मैदानी, सुन्दर, लम्बा, ऊँचा, मासिक, प्रात:कालीन, स्वस्थ, रोगी, लाल, हरा, पीला आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा की मात्रा (नाप-तौल) का बोध होता है, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं।

परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं

(i) **निश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की निश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें 'निश्चित परिमाणवाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—एक लीटर दूध, दस मीटर कपड़ा, एक किलो आलू आदि।

(ii) **अनिश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की अनिश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें 'अनिश्चित परिमाणवाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—थोड़ा दूध, कुछ शहद, बहुत पानी, अधिक पैसा आदि।

3. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—एक मेज, चार कुर्सियाँ, दस पुस्तकें, कुछ रुपये इत्यादि। संख्यावाचक विशेषण तीन प्रकार के होते हैं

(i) **निश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें 'निश्चित संख्यावाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—एक, दो, तीन; पहला, दूसरा, तीसरा; इकहरा, दोहरा; दोनों, तीनों, चारों, पाँचों इत्यादि।

(ii) **अनिश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें 'अनिश्चित संख्यावाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—थोड़े आदमी, कुछ रुपए आदि।

(iii) **विभागबोधक** जिन विशेषण शब्दों से विभाग या प्रत्येक का बोध होता है, उन्हें विभागबोधक विशेषण कहते हैं; जैसे—प्रत्येक व्यक्ति, पाँच-पाँच हाथी, दस-दस घोड़े आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। 'यह', 'वह', 'जो', 'कौन', 'क्या', 'कोई', 'ऐसा', 'ऐसी', 'वैसा', 'वैसी' इत्यादि ऐसे सर्वनाम हैं, जो संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का कार्य करते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, जब ये सर्वनाम अकेले प्रयुक्त होते हैं तो सर्वनाम होते हैं; जैसे—

- **इस** परीक्षार्थी ने नकल की है।
- **वह** नेता विधायक है।

क्रिया

जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना समझा जाए, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं; जैसे—खाना, पीना, पढ़ना, लिखना, चलना, दौड़ना इत्यादि। हिन्दी में क्रिया के रूप, लिंग वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के मुख्य रूप से दो भेद हैं

1. सकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—अध्यापक ने लड़के को पीटा। इस वाक्य में अध्यापक (कर्ता) द्वारा 'पीटने' के कार्य का फल लड़के (कर्म) पर पड़ा। अत: इस वाक्य में सकर्मक क्रिया है।

2. अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल **कर्ता** में ही रहता है उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे–**विद्यार्थी पढ़ता है।** इस वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया का फल विद्यार्थी (कर्ता) पर पड़ता है। अतः इस वाक्य में अकर्मक क्रिया है।

उल्लेखनीय जिन धातुओं का प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में होता है, उन्हें **उभयविध धातु** कहते हैं।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु के आगे ना जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है; जैसे–पठ धातु में ना जोड़ने से पढ़ना बन जाता है, इसी प्रकार लिख + ना = लिखना, चल + ना = चलना आदि।

क्रिया-विशेषण

वह शब्द, जो क्रिया की विशेषता, समय, स्थान, रीति (शैली) और परिमाण के विषय में बताए, क्रिया विशेषण कहलाता है; जैसे–'मुकेश कल आएगा' यहाँ पर 'कल' शब्द मुकेश के आने के समय को बताता है। अतः यह क्रिया विशेषण है।

क्रिया-विशेषण के भेद

क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं

1. कालवाचक

जिन शब्दों से क्रिया में समय सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—अब, कब, तब, जब; आज, कल, परसों; सुबह, दोपहर, शाम; अभी-अभी, कभी-कभी, कभी न कभी, सदा, सर्वदा, सदैव; पहले, पीछे, नित्य, ज्यों ही, त्यों ही, एक बार, पहली बार, आजकल, घड़ी-घड़ी, रातभर, दिनभर, क्षणभर, कितनी देर में, शीघ्र, जल्दी, बार-बार इत्यादि। कालवाचक के तीन भेद माने जाते हैं।

2. स्थानवाचक

जिन शब्दों से क्रिया में स्थान सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे–यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, वहीं, कहीं, हर जगह, सर्वत्र, बाहर-भीतर, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, कहीं-कहीं, अन्यत्र इत्यादि।

3. परिमाणवाचक

जिन शब्दों से क्रिया का परिमाण (नाप-तौल) सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे–इतना, उतना, कितना, जितना, थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी, क्रमशः, कम, अधिक, ज्यादा, पर्याप्त, काफी, केवल, जरा, बस, लगभग, कुछ बिल्कुल, कहाँ तक, जहाँ तक, पूर्णतया इत्यादि

4. रीतिवाचक

जिन शब्दों से क्रिया की रीति सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। रीतिवाचक क्रिया विशेषणों की संख्या बहुत बड़ी है। जिन क्रिया विशेषणों का समावेश दूसरे वर्गों में नहीं हो सकता, उनकी गणना इसी में की जाती है।

शब्द-भेद

प्रयोग के आधार पर शब्दों की भिन्न-भिन्न जातियाँ होती हैं, जिन्हें शब्द-भेद कहा जाता है। शब्द-भेद को मुख्यतः दो वर्गों स्रोत व रचना के आधार पर विभक्त किया जाता है।

स्रोत के आधार पर

स्रोत के आधार पर पुर्तगाली, अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी आदि आगत (विदेशी) भाषा के शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्द जो हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं, उन्हें स्रोत के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है

1. तत्सम, तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्द

(i) **तत्सम शब्द** जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में आए हैं और ज्यों के त्यों प्रयुक्त किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–"राजा, पुष्प, कवि, आज्ञा, अग्नि, वायु, वत्स, भ्राता इत्यादि।"

(ii) **तद्भव शब्द** वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हुए हैं और परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रयुक्त किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–मोर, चार, बच्चा, फूल इत्यादि।

(iii) **अर्द्धतत्सम शब्द** अर्द्धतत्सम शब्द उन संस्कृत शब्दों को कहते हैं, जो प्राकृव भाषा बोलने वालों के उच्चारण से बिगड़ते-बिगड़ते कुछ और ही रूप के हो गए हैं; जैसे–बच्छ, अग्याँ, मुँह, बंस इत्यादि।

⚠ विभिन्न परीक्षाओं में तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखने के लिए आते हैं। अतः छात्रों की सुविधा हेतु तद्भव और तत्सम शब्दों की सूची यहाँ प्रयुक्त है

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
अंगरखा	अंगरक्षक	अढ़ाई	अर्द्धतृतीय
अंगीठी	अग्निष्ठिका	अदरक	आर्द्रक
अँगुरी	अंगुली	अधूरा	अर्द्धपूरक
अँगूठा	अंगुष्ठ	अनाड़ी	अनार्य
अंगूली	अंगुलीय	अनी	अणि
आँख	अक्षि	आप	आत्मा
आँय	अर्चि	आयसु	आदेश
आँवला	आमलक	आँसू	अश्रु
इकट्ठा	एकत्र	इक्यासी	एकाशीति
इकतीस	एकत्रिंशत्	इतना	इयत
इकतालीस	एकचत्वारिंशत	इतवार	आदित्यवार
इकसठ	एकयष्ठि	इलायची	एला
इक्कीस	एकविंशति	इस	एतस्य
इक्यावन	एकपंचाशत्	इमली	अम्लिका
ईट	इसिका	ईख	इक्षु
ईंधन	इन्धन	ईर्षा	ईर्ष्या
उँगली	अँगुलि	उबटन	उद्धर्तन
उगलना	उद्गलन	उबालना	उद्वालन
उछाह	उत्साह	उलाहना	उपालम्भ
उजाला	उज्ज्वल	उल्लू	उलूक
ऊँचा	उच्च	ऊँट	उष्ट्र
ऊखल	उद्खल	ऊन	ऊर्णा
ऊसर	ऊषर	एकलौता	एकल पुत्र
एका	ऐक्य	ऐसा	ईदृश
ओंठ	ओष्ठ	ओर	अवर
ओखन	उद्खल	ओस	अवश्याय
ओझा	उपाध्याय	ओला	उपल
औगुन	अवगुन	और	अपर
औंधा	अवमूर्ध	औचक	अकस्मात्
कँवल	कमल	किवाड़	कपाट
कीड़ा	कीटक	कुंजी	कुञ्जिका

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
कुआँ	कूप	कुम्हार	कुम्भकार
कड़ुआ	कटुक	कूर	क्रूर
खंडहर	खंडगृह	खत्री	क्षत्रिय
खप्पर	खर्पर	खार	क्षार
खम्भा	स्तम्भ	खीर	क्षीर
खुर	क्षुर	खेत	क्षेत्र
खाई	खाति	खेती	क्षेत्रति
गँवार	ग्रामीण	गुफा	गुहा
गधा	गर्दभ	गेंद	कंदुक
घड़ा	घट	घिसना	घृषण
घड़ी	घटिका	घी	घृत
चख	चक्षु	चीता	चित्रक
चकवा	चक्रवाक	चूना	चूर्ण
चक्का	चक्र	चोरी	चौरिका
छत	छत्र	छाजन	छादम
छकड़ा	शकर	छिन	क्षण
छति	क्षति	छिमा	क्षमा
छत्री	क्षत्रिय	छिलका	शकल
छात्रा	छत्र/छत्रक	छुरी	क्षुरिका
छाँह	छाया	छेद	छिद्र
जड़	जटा	जनेऊ	यज्ञोपवीत
जलना	ज्वलन	जेठ	ज्येष्ठ
झट	झटिति	झीना	जीर्ण
झरना	निर्झर	जूठा	जुष्ट
टकसाल	टंकशाला	टूटना	त्रुट्यते
ठण्डा	स्तब्ध/शीत	ठाँव	स्थान
डंक/डंका	दंश	डाँड़	दण्ड
डर	दर	डाइन	डाकिनी
ढाई	अर्द्धतृतीय	ढीठ	धृष्ट
ढीला	शिथिल	ढौंचा	अर्द्धपंच
तपसी	तपस्वी	तीता	तिक्त
तलवार	तरवारि	तुरत	त्वरित
ताँबा	ताम्र	तेल	तैल
ताव	तर्कन	तोड़ना	त्रोटन
तिनका	तृण	त्योहार	तिथिवार
थम्भ	स्तम्भ	थल	स्थल
थन	स्तन	था	स्थित
थान	स्थान	थोड़ा	स्तोक
दही	दधि	दुबला	दुर्बल
दाई	धात्री	दूध	दुग्ध
धरम	धर्म	धीरज	धैर्य
धरती	धरित्री	धुआँ	धूम
धनिया	धनिका	धूल	धूलि
धान	धान्य	धोना	धावन
नंगा	नग्न	निभाना	निर्वहण
नखत	नक्षत्र	नींबू	निम्बक
नया	नव	नेउता	निमन्त्रण
नाई	नापित	नेम	नियम
पंख	पक्ष	पाती	पत्रिका
पंगत	पंक्ति	पापड़	पर्पट
पंछी	पक्षी	पाहन	पाषाण
फटिक	स्फटिकी	फूटना	स्फुटन

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
फटकरी	स्फटिकी	फुल्का	फुल्ल
बखान	व्याख्यान	बत्ती	वर्तिका
बगुला	वक	बात	वार्ता
भण्डार	भांडागार	भालू	भल्लूक
भट्ठी	भ्राष्ट्रिका	भीतर	अभ्यन्तर
मक्खी	मक्षिका	मीत	मित्र
मछली	मत्स्य	मुट्ठी	मुष्टि
यह	एष	यों	एवम्
रहट	अरघट्ट	रीता	रिक्त
राख	क्षार	रीस	ईर्ष्या
लँगड़ा	लंग	लिपटना	लिप्त
लकड़ी	लगुड़	लोहा	लौह
लखपति	लक्षपति	लोहार	लौहकार
वह	असौ	बिछोह	विक्षोभ
शक्कर	शर्करा	शांम	सायं
शिस्य	शिष्य	शीशम	शिशपा
सतसई	सप्तशती	सावन	श्रावण
सपना	स्वप्न	सूअर	शूकर
हड्डी	अस्थि	हीरा	हीरक
हल्दी	हरिद्रा	हिया	हृदय

2. देशज और विदेशज शब्द

(i) **देशज शब्द** (देशी) 'देशज' शब्द की उत्पत्ति 'देश + ज' के योग से हुई है, जिसका अर्थ है–'देश में जन्मा'। देशज उन शब्दों को कहते हैं, जो बोलचाल तथा देश की अन्य भाषाओं से गृहीत हैं;

नीचे कुछ मुख्य देशज (देशी) शब्दों की सूची दी जा रही है, जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाते हैं

लकड़ी	खिड़की	थैला	घरौंदा	पगड़ी
लुटिया	डिबिया	जूता	चिड़िया	तेंदुआ
कपास	पिल्ला	चूड़ी	रोटी	दाल
बेटा	पड़ोसी	कौड़ी	बाप	पेट

(ii) **विदेशज शब्द** (विदेशी/आगत) 'विदेशज' शब्द की उत्पत्ति 'विदेश + ज' के योग से हुई है, जिसका अर्थ है–'विदेश में जन्मा'। विदेशज उन शब्दों को कहते हैं, जो किसी विदेशी भाषा से आए हैं। विदेशी भाषा से आने के कारण ही इन्हें आगत शब्द की संज्ञा दी जाती है।

नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण विदेशी शब्दों (अरबी, फारसी, और अंग्रेजी) की सूची दी गई है, जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से उपयोगी हैं।

	अरबी		
कुर्सी	ख्याल	जिस्म	जुलूस
जलसा	जवाब	जहाज	जिक्र
तमाम	तकदीर	तारीख	तकिया
	फारसी		
आबरू	आतिशबाजी	आफत	आराम
आमदनी	आवारा	आवाज	उम्मीद
	अंग्रेजी		
अपील	कोर्ट	मजिस्ट्रेट	जज
पुलिस	टैक्स	कलेक्टर	डिप्टी

		तुर्की	
उर्दू	बहादुर	कुरता	कलगी
कैंची	चाकू	ताश	दरोगा
		पश्तो	
पठान	गुण्डा	खर्राटा	तहस-नहस
अखरोट	पटाखा	डेरा	गटागट
		पुर्तगाली	
अनन्नास	अलमारी	आलपिन	आया
इस्त्री	इस्पात	कमीज	कमरा

रचना के आधार पर

रचना के आधार पर हिन्दी एक रचनात्मक भाषा है।

रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं

1. रूढ़

रूढ़ शब्द वे हैं, जिनका कोई भी खण्ड सार्थक नहीं होता है और परम्परा से किसी विशिष्ट अर्थ में चले आ रहे हैं; जैसे—नाक, जल, आग आदि।

2. यौगिक

वे शब्द, जो दो-या-दो से अधिक सार्थक शब्द-खण्डों के योग से निर्मित होते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे—

पाठशाला = पाठ और शाला

विज्ञान = वि + ज्ञान

राजपुत्र = राजा का पुत्र

3. योगरूढ़

वे शब्द, जो यौगिक तो होते हैं, परन्तु जिनका अर्थ रूढ़ (विशेष अर्थ) हो जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। ये सामान्य अर्थ को प्रकट न कर किसी विशेष अर्थ का प्रकटीकरण करते हैं; जैसे—लम्बोदर, जलज, चौपाई आदि।

सन्धि

दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं; जैसे—सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र, विद्या + आलय = विद्यालय।

सन्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं

1. **स्वर सन्धि** स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं
   - (i) **दीर्घ सन्धि** ह्रस्व या दीर्घ स्वरों के मिलने से उनके स्थान में स्वर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। वर्णो का संयोग चाहे ह्रस्व + ह्रस्व का या ह्रस्व + दीर्घ को दीर्घ सन्धि कहते हैं, जैसे—
   - (ii) **गुण सन्धि** जब 'अ' अथवा 'आ' से 'ई', 'ई', 'उ', 'ऊ' व 'ऋ' की सन्धि होती है, तो उससे क्रमशः ए', 'ओ' और 'अर्' विकार उत्पन्न होते हैं। जैसे—

     अ, आ + उ, ऊ = ओ; अ, आ + ऋ = अर्
   - (iii) **वृद्धि सन्धि** जब अ या आ के आगे 'ए' या 'ऐ' आता है, तो दोनों का ऐ हो जाता है। इसी प्रकार अ या आ के आगे 'ओ' या 'औ' आता है, तो दोनों का औ हो जाता है, इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं।
   - (iv) **यण् सन्धि** जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आता है, तो ये क्रमशः य्, व्, र्, ल् में परिवर्तित हो जाते हैं, इस परिवर्तन को यण् सन्धि कहते हैं।
   - (iv) **अयादि सन्धि** जब ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो 'ए' का अय, 'ऐ' का आय्, 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है।
2. **व्यंजन सन्धि** व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न सन्धि को व्यंजन सन्धि कहते हैं।
3. **विसर्ग सन्धि** विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग से जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

समास

दो-या-दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बनाने वाले शब्दों अथवा कारक चिह्नों का लोप होने पर उन दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से बने एक स्वतन्त्र शब्द को समास कहते हैं। इस प्रक्रिया से बने शब्द को सामासिक पद कहा जाता है। सामासिक पद के सभी पदों को अलग करने की प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहा जाता है। समास के छः भेद हैं

1. **अव्ययीभाव समास** जिस समास से पूर्वपद अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह वाक्य में क्रिया-विशेषण का कार्य करता है; जैसे— यथास्थान = स्थान के अनुसार

   आजीवन = जीवन-भर
2. **तत्पुरुष समास** जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष समास कहलात है। दोनों पदों के बीच परसर्ग का लोप रहता है। परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद हैं
   - (i) **कर्म तत्पुरुष** ('को' का लोप) जैसे—

     मतदाता = मत को देने वाला

     गिरहकट = गिरह को काटने वाला
   - (ii) **करण तत्पुरुष** जहाँ करण-कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

     जन्मजात = जन्म से उत्पन्न

     मुँहमाँगा = मुँह से माँगा

     गुणहीन = गुणों से हीन
   - (iii) **सम्प्रदान तत्पुरुष** जहाँ सम्प्रदान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

     हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी

     सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह

     युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि
   - (iv) **अपादान तत्पुरुष** जहाँ अपादान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

     धनहीन = धन से हीन

     भयभीत = भय से भीत

     जन्मान्ध = जन्म से अन्धा
   - (v) **सम्बन्ध तत्पुरुष** जहाँ सम्बन्ध कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

     प्रेमसागर = प्रेम का सागर

     दिनचर्या = दिन की चर्या

     भारतरत्न = भारत का रत्न

(vi) **अधिकरण तत्पुरुष** जहाँ अधिकरण कारक चिह्न का लोप हो; जैसे— नीतिनिपुण = नीति में निपुण

आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास

घुड़सवार = घोड़े पर सवार

3. **कर्मधारय समास** जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें भी उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे— कालीमिर्च = काली है, जो मिर्च

नीलकमल = नीला है, जो कमल

पीताम्बर = पीत (पीला) है, जो अम्बर

चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुख वाली

सद्‌गुण = सद्‌ हैं, जो गुण

4. **द्वन्द्व समास** जिस समास में पूर्वपद और उत्तर पद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है; जैसे—

माता-पिता = माता और पिता

राम-कृष्ण = राम और कृष्ण

भाई-बहन = भाई और बहन

पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

सुख-दु:ख = सुख और दु:ख

5. **द्विगु समास** जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, द्विगु समास कहलाता है; जैसे—

नवरत्न = नौ रत्नों का समूह

सप्तदीप = सात दीपों का समूह

त्रिभुवन = तीन भुवनों का समूह

सतमंजिल = सात मंजिलों का समूह

6. **बहुव्रीहि समास** जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे—

महात्मा = महान् आत्मा है, जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला

नीलकण्ठ = नीला कण्ठ है, जिनका अर्थात् शिवजी

लम्बोदर = लम्बा उदर है, जिनका अर्थात् गणेशजी

गिरिधर = गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण

मक्खीचूस = बहुत कंजूस व्यक्ति

उपसर्ग

उपसर्ग किसी भी सार्थक मूल शब्द से पूर्व जोड़े जाने वाले व अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ या भाव में परिवर्तन कर देते हैं। **जैसे**—'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया जाए तो नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'।

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग मुख्यत: तीन भागों में विभक्त किए जा सकते हैं

1. संस्कृत के उपसर्ग (तत्सम्)
2. हिन्दी के उपसर्ग (तद्‌भव)
3. आगत उपसर्ग (विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए मुख्यत: उर्दू (फारसी-अरबी) एवं अंग्रेजी)

1. **संस्कृत के उपसर्ग** संस्कृत के कुल 22 उपसर्ग हैं, जिनका प्रयोग 'हिन्दी' भाषा में होता है, इसलिए इन्हें 'तत्सम्' उपसर्ग भी कहा जाता है।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति	अधिक, सीमा से परे	अतिवृद्धि, अत्युक्ति, अत्याचार
अधि	अधिक, ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकृत, अध्यवसाय, अधिकार
अनु	पीछे, क्रम, समानता	अनुमान, अनुकूल, अनुप्रास
अप्	बुरा, अभाव, विपरीत	अपराध, अपहरण, अपशब्द
अपि	निकट	अपिधान, अपिसार, अपिमान
अभि	सामने, अधिक, अच्छा	अभिमान, अभिलाषा, अभिमान
अव	पतन, हीनता	अवनति, अवगुण, अवमानना
आ	तक, सब तरफ से, ओर	आदर, आडम्बर, आचरण
उत्, उद्	ऊपर, अधिक	उद्‌भव, उत्संग, उद्‌गम, उत्पात,
उप	समीप, सहायक, छोटा	उपयुक्त, उपहार, उपद्रव
दु: (दुर्, दुस्)	बुरा, दुष्ट कठिन	दुर्गम, दुष्कर, दुर्लंघ्य, दुर्लभ
नि	बहुत-नीच, अलावा	निवास, निवेदन, निकट, निबन्ध
नि: (निस्, निर्)	बना, बाहर, निषेध	निर्देश, निराकरण, निर्जीव
पुरा	विपरीत, अनादर	पराधीन, पराकाष्ठा
परि	चारों ओर, आस-पास	परिचय, परिणाम, परिसर
प्रति	विपरीत, समान, प्रत्येक	प्रतिकूल, प्रतिमूर्ति, प्रतिदिन
वि	विशेष, रहित	विहार, विरह, विपक्ष, वियोग
सम्, सन्	संयोग, पूर्णता	सन्तोष, संचय, सम्भाषण, सन्देश
सु	अच्छा, सरल	स्वागत, सुवासित, सुअवसर

2. **हिन्दी के उपसर्ग (तद्‌भव)** हिन्दी के उपसर्ग मूलत: संस्कृत से ही विकसित हुए हैं। इनकी कुल संख्या 10 है, जो निम्न हैं

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	निषेध, अभाव	अपढ़, अलग, अनाम, अजान, अथाह
अध्	आधा	अधखिला, अधपका, अधकचरा
अन्	अभाव, निषेध	अनपढ़, अनमोल, अनगढ़, अनिच्छा
उन	एक कम	अनचास, उनहत्तर, उन्नतालीस
औ (अव)	हीनता, नहीं	औघड़, औघट, अवगुण
क, कु	बुरा	कुपात्र, कुलेख कुपूत, कुचाल
स, सु	अच्छा, सहित	सुकर्म सुपूत, सुजान, सुलेख
स	साथ, सहित	सगोत्र, सरस, सहित, सजग
दु	बुरा, हीन	दुकाल, दुलारा, दुसाध्य
नि	नहीं, अभाव	निधड़क, निडर, निकम्मा

3. **आगत उपसर्ग (विदेशी)** हिन्दी में विदेशी भाषाओं से आए आगत उपसर्ग मुख्यत: उर्दू एवं अंग्रेज़ी भाषा से विकसित हुए हैं, जो निम्न हैं

(i) **उर्दू के उपसर्ग**

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कम	थोड़ा, हीन	कमज़ोर, कम अक्ल, कम उम्र
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशहाल
गैर	नहीं, अभाव	गैर-हाजिर, गैर-कानूनी, गैर-सरकारी
दर	में	दरअसल, दरमियान, दरकार
ना	अभाव	नापसन्द, नासमझ, नाराज
ब	अनुसार में	बनाम, बदस्तूर, बदौलत
हम	बराबर	हम उम्र, हम वतन
हर	प्रत्येक	हररोज, हर एक

उपरोक्त तीन विभाजनों के अतिरिक्त अंग्रेज़ी उपसर्ग तथा गति शब्द का प्रयोग भी हिन्दी में प्रचलित है।

(ii) **अंग्रेजी के उपसर्ग**

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
सब	अधीन, नीचे	सब-जज, सब-कमेटी
डिप्टी	सहायक	डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्ट्रार
वाइस	सहायक	वाइसराय, वाइस चान्सलर
जनरल	प्रधान	जरनल मैनेचर, जनरल सेक्रेटरी
चीफ	प्रमुख	चीफ-मिनिटस्त्र, चीप-इन्जीनियर
हेड	मुख्य	हेड मास्टर, हेड क्लर्क
डबल	दोगुना	डबल रोटी, डबल बेड
फुल	पूरा	फुल शर्ट, फुल प्रूफ
हाफ	आधा	हाफ शर्ट-हाफ पैंट

प्रत्यय

किसी भी सार्थक मूल शब्द के पश्चात् जोड़े जाने वाले वे अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में या भाव में परिवर्तन कर देते हैं प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे— सफल + ता = सफलता

यहाँ 'ता' शब्दांश प्रत्यय है, जिसकी 'सफल' मूल शब्द के बाद में जोड़ दिए जाने पर 'सफलता' शब्द की रचना हुई है।

प्रत्ययों को दो भागों में विभक्त किया गया है

1. **कृत प्रत्यय** वे प्रत्यय, जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त शब्द कहलाते हैं; जैसे—पठ् + अक = पाठक। यहाँ 'अक' कृत् प्रत्यय है एवं 'पाठक' कृदन्त शब्द है।
2. **तद्धित प्रत्यय** वे शब्द, जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण) में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितान्त शब्द कहलाते हैं; जैसे—ठाकुर + आइन = ठकुराइन। यहाँ 'आइन' तद्धित प्रत्यय है तथा 'ठकुराइन' तद्धितान्त शब्द है।

पर्यायवाची शब्द

पर्याय का अर्थ है—समान। अत: समान अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द (Synonym words) कहते हैं। इन्हें प्रतिशब्द या समानार्थक शब्द भी कहा जाता है। व्यवहार में पर्याय या पर्यायवाची शब्द ही अधिक प्रचलित है। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु पर्यायवाची शब्दों की सूची प्रस्तुत है।

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अंक	संख्या, गिनती, क्रमांक, निशान, चिह्न, छाप।
अंकुर	कोंपल, अँखुवा, कल्ला, नवोद्भिद्, कलिका, गाभा।
अग्नि	आग, अनल, पावक, जातवेद, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन
अंचल	पल्लू, छोर, क्षेत्र, अंत, प्रदेश, आँचल, किनारा।
अश्व	घोड़ा, तुरंग, हय, बाजि, सैन्धव, घोटक, बछेड़ा।
अतिथि	मेहमान, पहुना, अभ्यागत, रिश्तेदार, नातेदार, आगन्तुक।
अनाज	अन्न, शस्य, धान्य, खाद्यान्न।
अज	ब्रह्मा, ईश्वर, दशरथ के जनक, बकरा।
अरण्य	जंगल, कान्तार, विपिन, वन, कानन।
आधुनिक	अर्वाचीन, नूतन, नव्य, वर्तमान कालीन, नवीन।
आँसू	अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि, नयननीर
आकाश	नभ, अम्बर, अन्तरिक्ष, आसमान, व्योम, गगन, दिव, द्यौ।
आडम्बर	पाखण्ड, ढकोसला, ढोंग, प्रपंच, दिखावा।
आँख	अक्षि, नैन, नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, ईक्षण, विलोचन।
इन्दिरा	लक्ष्मी, रमा, श्री, कमला।
इच्छा	लालसा, कामना, चाह, मनोरथ, ईहा, ईप्सा, आकांक्षा।
इन्द्र	महेन्द्र, सुरेन्द्र, सुरेश, पुरन्दर, देवराज, मघवा, पाकरिपु।
इन्द्रधनुष	सुरचाप, इन्द्रधनु, शक्रचाप, सप्तवर्णधनु।
इन्द्रपुरी	देवलोक, अमरावती, इन्द्रलोक, देवेन्द्रपुरी, सुरपुर।
ईख	गन्ना, ऊख, रसडंड, रसाल, पेंडी, रसद।
ईश्वर	परमात्मा, परमेश्वर, ईश, ओम, ब्रह्म, अलख, अनादि।
उत्कर्ष	उन्नति, उत्थान, अभ्युदाय, उन्मेष।
उत्सुक	आतुर, उत्कण्ठित, व्यग्र, उत्कर्ण, रुचि, रुझान।
उपकार	परोपकार, भलाई, नेकी, कल्याण।
ऊँचा	उच्च, शीर्षस्थ, उन्नत, उत्तुंग।
ऊँघ	तंद्रा, ऊँचाई, झपकी, अर्द्धनिद्रा, अलसाई।
ऋषि	मुनि, मनीषी, महात्मा, साधु, सन्त, सन्यासी, मन्त्रदृष्टा।
ऋद्धि	बढ़ती, बढ़ोत्तरी, वृद्धि, सम्पन्नता, समृद्धि
एकता	एका, सहमति, एकत्व, मेल-जोल, समानता, एकरूपता।
एकांत	सुनसान, शून्य, सूना, निर्जन, विजन।
एकाएक	अकस्मात, अचानक, सहसा, एकदम।
ऐश्वर्य	वैभव, प्रभुता, सम्पन्नता, समृद्धि, सम्पदा।
ऐच्छिक	स्वेच्छाकृत, वैकल्पिक, अख्तियारी।
ओज	दम, जोर, पराक्रम, बल, शक्ति, ताकत।
ओझल	अन्तर्ध्यान, तिरोहित, अदृश्य, लुप्त, गायब।
ओस	तुषार, हिमकण, हिमसीकर, हिमबिन्दु, तुहिनकण।
ओंठ	होंठ, अधर, ओष्ठ, दन्तच्छद, रदनच्छद, लब।
कपड़ा	चीर, वस्त्र, वसन, अम्बर, पट, पोशाक चैल, दुकुला
कबूतर	कपोत, रक्तलोचन, हारीत, पारावत।
कृषक	किसान, काश्तकार, हलधर, जोतकार, खेतिहर।
कर्म	कार्य, कृत्य, क्रिया, काम, काज।
कुबेर	राजराज, किन्नरेश, धनाधिप, धनेश।
खंग	पक्षी, चिड़िया, पखेरु, द्विज, पँछी, विहंग, शकुनि।
खल	शठ, दुष्ट, धूर्त, दुर्जन, कुटिल, नालायक, अधम।
गरुढ़	खगेश्वर. सुपर्ण, वैतनेय नागान्तका
गाय	धेनु, सुरभि, माता, कल्याणी, पयस्विनी, गौ।
घी	घृत, हवि, अमृतसागर।
घृणा	जुगुप्सा, अरुचि, घिन, बीभत्स।
चंदन	मंगल्य, मलयज, श्रीखण्ड।
चरित्र	आचार, सदाचार, शील, आचरण।
चपला	विद्युत्, बिजली, चंचला, दामिनी, तड़िता
छात्र	विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शिष्य।
छाया	साया, प्रतिबिम्ब, परछाई, छाँव।

शब्द	पर्यायवाची शब्द
छल	प्रपंच, झाँसा, फरेब, कपट।
छटा	आभा, कांति, चमक, सौन्दर्य, सुन्दरता।
जननी	माँ, माता, माई, मइया, अम्बा, अम्मा।
जिज्ञासा	उत्सुकता, उत्कण्ठा, कुतूहल।
झण्डा	ध्वजा, केतु, पताका, निसान।
झरना	सोता, स्रोत, उत्स, निर्झर, जलप्रपात, प्रपात।
टीका	भाष्य, वृत्ति, विवृत्ति, व्याख्या भाषान्तरण।
टीस	साल, कसक, शूल, शूक्त, चसक, दर्द, पीड़ा।
ठण्ड	शीत, ठिठुरन, सर्दी, जाड़ा, ठण्डक।
ठेस	आघात, चोट, ठोकर, धक्का।
ठग	जालसाज, प्रवंचक, वंचक, प्रतारक।
डर	त्रास, भीति, दहशत, आतंक, भय, खौफ।
डोर	डोरी, रज्जु, तांत, रस्सी, पगहा, तन्तु।
तन	शरीर, काया, जिस्म, देह, वपु।
तपस्या	साधना, तप, योग, अनुष्ठान।
थकान	क्लान्ति, श्रान्ति, थकावट, थकन।
थोड़ा	कम, जरा, अल्प, स्वल्प, न्यून।
देवता	सुर, आदित्य, अमर, देव, वसु।
दुर्गा	सिंहवाहिनी, कालिका, अजा, भवानी, चण्डिका, कल्याणी।
धनुष	चाप, धनु, शरासन, पिनाक, कोदण्ड, कमान, विशिखासन।
धीरज	धीरता, धीरत्व, धैर्य, धारण, धृति।
धरती	धरा, धरणी, पृथ्वी, क्षिति, वसुधा, अवनी, मेदिनी।
धवल	श्वेत, सफेद, उजला।
ध्रुव	दृढ़, अटल, स्थिर, निश्चित।
नित्य	हमेशा, रोज, सनातन, सर्वदा, सदा, सदैव, चिरन्तन, शाश्वत।
निधि	कोष, खजाना, भण्डार।
नीरस	रसहीन, फीका, सूखा, स्वादहीन।
पथिक	राही, बटाऊ, पंथी, मुसाफिर, बटोही
पवित्र	पुनीत, पावन, शुद्ध, शुचि, साफ, स्वच्छ।
प्रलय	कयामत, विप्लव, कल्पान्त, गजब।
प्रज्ञा	बुद्धि, ज्ञान, मेधा, प्रतिभा।
पल्लव	किसलय, पर्ण, पत्ती, पात, कोपल, फुनगी।
फणी	सर्प, साँप, फणधर, नाग, उरग।
फूल	सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून, पुष्प, पुहुप, मंजरी, लतांत।
बलराम	हलधर, बलवीर, रेवतीरमण, बलभद्र, हली।
बन्दर	कपि, वानर, मर्कट, शाखामृग, कीश।
भारती	सरस्वती, ब्राह्मी, विद्या देवी, शारदा, वीणावादिनी।
भास्कर	चमकीला, आभामय, दीप्तिमान, प्रकाशवान।
भिक्षुक	भिखमंगा, भिखारी, याचक।
मछली	मीन, मत्स्य, सफरी, क्षष।
महादेव	शंकर, शम्भू, शिव, पशुपति, चन्द्रशेखर, महेश्वर, भूतेश।
मक्खन	नवनीत, दधिसार, माखन, लौनी।
माँ	मातृ, मातरि, मैया, महतारी, जनयित्री, जन्मदात्री।
मृत्यु	देहावसान, देहान्त, पंचतत्वलीन, निधन, मौत।
माधुरी	माधुर्य, मिठास, मधुरता।
मोर	मयूर, नीलकण्ठ, शिखी, केकी, कलापी।
यम	सूर्यपुत्र, धर्मराज, कीनाश, दण्डधर, शमन।
युद्ध	रण, जंग, समर, लड़ाई, संग्राम।

शब्द	पर्यायवाची शब्द
रक्त	खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित, रोहित।
रात	रैन, रजनी, निशा, विभावरी, यामिनी, तमी, तमस्विनी, शर्वरी।
रिपु	बैरी, दुश्मन, विपक्षी, विरोधी, प्रतिवादी, अमित्र, शत्रु।
लक्ष्मण	अनन्त, लखन, सौमित्र।
लक्ष्मी	श्री, कमला, रमा, पद्मा, हरिप्रिया, क्षीरोद, इन्दिरा, समुद्रजा।
वक्ष	सीना, छाती, वक्षस्थल।
विभोर	मस्त, मुग्ध, मग्न, लीन।
विष्णु	नारायण, केशव, गोविन्द, माधव, जनार्दन, विशम्भर, मुकुन्द।
शंकर	शिव, उमापति, शम्भू, भोलेनाथ, त्रिपुरारि, महेश, देवाधिदेव।
समुद्र	नदीश, वारीश, रत्नाकर, उदधि, पारावार।
स्वर्ण	सुवर्ण, सोना, कनक, हिरण्य, हेम।
स्वर्ग	सुरलोक, धुलोक, बैकुंठ, परलोक।
हंस	मुक्तमुक, मराल, सरस्वतीवाहन।
हिरन	मृग, हरिण, कुरंग, सारंग।
क्षेत्र	प्रदेश, इलाका, भू-भाग, भूखण्ड।
क्षुब्ध	व्याकुल, विकल, उद्विग्न

विलोमार्थक शब्द

'विलोम' शब्द का अर्थ है—उल्टा या विपरीत। अत: किसी शब्द का उल्टा अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द विलोमार्थक शब्द कहलाता है। विलोम शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'Antonyms' होता है। विलोमार्थक शब्दों को विपर्यायवाची, प्रतिलोमार्थक और विलोम शब्द भी कहते हैं।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अंतरंग	बहिरंग	अक्षत	विक्षत
अकर्मक	सकर्मक	अभिमुख	प्रतिमुख
अग्र	पश्च	अधिमूल्यन	अवमूल्यन
अधोमुखी	ऊर्ध्वमुखी	अनागत	विगत
अधोगामी	ऊर्ध्वगामी	अधिकृत	अनधिकृत
अति	अल्प	अथाह	छिछला
अनुकूल	प्रतिकूल	अविचल	विचल
अपव्यय	मितव्यय	अतिथि	अतिथेय
आदृत	अनादृत	आत्यन्तिक	परिमित
आसक्त	अनासक्त	आवर्तक	अनावर्तक/विवर्तक
आरूढ़	अनारूढ़	आहूत	अनाहूत
आज़ादी	गुलामी	आहार्य	अनाहार्य
इच्छुक	प्रतिच्छुक	इष्ट	अनिष्ट
इच्छा	अनिच्छा	इति	अथ
ईहा	अनीहा	ईश्वर	अनीश्वर
ईडा	निन्दा	ईप्सित	अनीप्सित
उक्त	अनुक्त	उन्मत्त	अनुन्मत्त
उद्गम	विलय	उदात्त	अनुदात्त
उद्धत	विनत	उच्छिष्ट	अनुच्छिष्ट
उदार	अनुदार/कृपण	उद्वेग	निरुद्वेग
ऊर्ध्व	अधो	ऊधम	विनय
ऋजु	वक्र	ऋण	धन

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
ऋतु	अनृत	ऋद्धि	विपन्न
एकत्र	विकीर्ण	एकता	अनेकता
एकांगी	अनेकांगी	एषणा	अनैषणा
एकपक्षीय	बहुपक्षीय	ऐन्द्री	इन्द्र
ऐक्य	अनैक्य	ओजस्वी	निस्तेज
ओतप्रोत	विहीन	ओह	वाह
औरत	मर्द	ओरस	दत्तक
औचित्य	अनौचित्य	औषधि	अनौषधि
कर्कश	सुशील	कापुरुष	पुरुषार्थी
कलंकित	निष्कलंक	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
काट्य	अकाट्य	कोलाहल	शान्ति
खेद	प्रसन्नता	ख्यात	कुख्यात
गणतन्त्र	राजतन्त्र	गहन	विरल
गुप्त	प्रकट	गम्भीर	अगम्भीर
गृही	त्यागी/सन्यासी	गम्य	अगम्य
गृहीत	त्यक्त	ग्राम्य	नागर
गरल	सुधा	ग्रथित	विकीर्ण
गौरक्षक	गौभक्षक	गुरुत्व	लघुत्व
गमन	आगमन	गूढ	प्रकट/अगूढ़
घोषित	अघोषित	घना	विरल
घना	विरल	चिकना	खुरदरा
चिरस्थायी	अल्पस्थायी	जाति	विजाति
जड़	चेतन	जाड़ा	गर्मी
जंमम	स्थावर	जय	पराजय
जाति	विजाति	ज्येष्ठ	कनिष्ठ
जागृत	सुषुप्त	झंकृत	निस्तब्ध
सामान्य	असामान्य	टीका	भाष्य
डाह	सद्भाव	डिम्ब	अक्षोभ
ढाल	तलवार	ढाढस	त्रास/निरुत्साह
तरुण	वृद्ध	तीक्ष्ण	कुण्ठित
तृष्णा	वितृष्णा	तेजस्वी	निस्तेज
शकावट	स्फूर्ति	थिर	गतिवान
दयालु	निर्दयी	दुर्गति	सुगति
दुश्कर	सुकर	द्वैत	अद्वैत
दिवा	रात्रि	द्वेष	सद्भावना
धरा	गगन	धवल	श्याम
ध्वंस	निर्माण	धृष्ट	विनीत या विनम्र
नश्वर	अनश्वर	न्यून	अधिक
नख	शिख	निषिद्ध	विहित
निश्चल	चंचल	नैसर्गिक	अनैसर्गिक
प्रसारण	संकुचन	पूर्ववर्ती	परवर्ती
प्रफुल्ल	म्लान	प्रगति	प्रतिगमन
पक्का	कच्चा	परोक्ष	प्रत्यक्ष/अपरोक्ष
प्रोत्साहित	हतोत्साहित	परिष्कृत	अपरिष्कृत
प्रत्यय	अप्रत्यय	प्रगल्भ	अप्रगल्भ

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
पुरोगामी	पश्चगामी	परिमित	अपरिमित
परिणत	अपरिणत	प्रौढ़	अप्रौढ़
पाच्य	अपाच्य	प्राकृतिक	अप्राकृतिक
बाधित	अबाधित	बन्धन	मोक्ष/मुक्ति
बन्धुत्व	शत्रुत्व	बहिष्कार	स्वीकार
बिम्ब	प्रतिबिम्ब	बहिरंग	अन्तरंग
बोध्य	अबोध्य	स्वीकार	अस्वीकार
भ्रान्त	निर्भ्रान्त	भूगोल	खगोल
महात्मा	दुरात्मा	मनुज	दनुज
मार्जित	अमार्जित	मित	अपरिमित
मानवता	दानवता/नृशंसता	मूढ़	ज्ञानी
महीन	मोटा	मृदुल	कठोर
यश	अपयश	यथार्थ	कल्पना/आदर्श
यन्त्रणा	सुख	यत	असंयत्त
रत	विरत	रुढ़िबद्ध	रूढ़िमुक्त
रक्षक	भक्षक	कठोर	मृदु
रद्द	बहाल	रौद्र	अरौद्र
रहमदिल	बेरहम	लक्ष्य	अलक्ष्य
लोहित	अलोहित	लाघव	गौरव
व्यष्टि	समष्टि	वैदिक	अवैदिक
विज्ञ	अविज्ञ	विलम्ब	अविलम्ब
विपद	सपद	विनीत	धृष्ट
दुर्लभ	सुलभ	विस्तारण	संक्षेपण
व्याप्त	अव्याप्त	विस्तीर्ण	अविस्तीर्ण
शिक्षित	अशिक्षित	शाश्वत	क्षणिक
शीर्ष/शिखर	तल	श्लील	अश्लील
सरकार	तिरस्कार	स्पष्ट	अस्पष्ट
सबल	दुर्बल	सामिष	निरामिष
सनातनी	प्रगतिवादी	सामयिक	असामयिक
सदाचार	दुराचार	सात्विक	तामसिक
सवर्ण	असवर्ण	साक्षर	निरक्षर
समूल	निर्मूल	साहचर्य	पृथक्करण
सातत्य	असातत्य	सन्निविष्ठन	निस्तारण
सात्विक	तामसिक	संपद्	विपद्
संयोग	वियोग	सत्कर्म	दुष्कर्म
संश्लिष्ट	विश्लिष्ट	स्थावर	जंगम
स्थूल	सूक्ष्म	सृजन	विनाश
हर्ष	विषाद	हत	अहत
ह्रस्व	दीर्घ	हास	रुदन
हेय	ग्राह्य	ह्रास	वृद्धि
क्षर	अक्षर	क्षति	लाभ
क्षुब्ध	शान्त	क्षुद्र	महत्
क्षय	अक्षय	शृंखला	विशृंखला
त्रिकोण	षट्कोण	त्रिकुटी	भृकुटी
ज्ञेय	अज्ञेय	ज्ञात	अज्ञात

www.classroomnotes.in